डॉ. रांगेय राघव के उपन्यासों का कथात्मक विश्लेषण

(मार्क्सवादी विचारधारा के विशेष सन्दर्भ में)

गिरधारी परिहार

शोधार्थी हिन्दी विभाग

जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर (राज.)

हिन्दी उपन्यास साहित्य में डॉ. रांगेय राघव के पूर्व पर्याप्त समृद्व हो चुका था। रांगेय राघव का युग हिन्दी उनन्यास साहित्य में परिवर्तन का युग स्थापित हो चुका था। इस परिवर्तन के पीछे देशव्यापी परिस्थितियों, स्थितियों का योगदान था। तत्कालीन उपन्यास विधा ने जीवन के प्रत्येक पक्ष को अपने में समेट लिया था। रांगेय राघव का सहित्य सृजन प्रेमचन्दोत्तर काल से प्रारम्भ होता है। परन्तु उन्होंने समकालीन जीवन के साथ–साथ भारत के अतीत कालीन परिवेश अर्थात् प्रागेतिहासिक काल से लेकर आधुनिक समय के भारतीय सामाजिक, आर्थिक सांस्कृतिक एवं राजनीतिक जीवन का बहुमूखी चित्रण किया गया है। ''महायात्रा, गाथा, अंधेरा रास्ता'' प्रागेतिहासिक काल से लेकर 1500 ई. पू0 से लेकर 1700 ई. तक के भारत ''मुर्दो का टीला'' 3500 ई. पू0 के भारत प्रतिदान ''देवकी का बेटा'', पक्षी और आकाश, बुद्विमान बुद्ध, युगीन भारत, चीवर, हर्षकालीन भारत, यशोधरा जीत गई, धुनी का धुँआ, जब आवेगी काल घटा, लोई का ताना, रत्ना की बात, मेरी भव बाधा हरो, आँधी की नीवे, मध्यकालीन भारत, भारती का सपूत 1850 ई. से 1885 ई तक के भारत ''हजूर'' ब्रिटीश युगीन भारत ''राई और पर्वत'', ''पथ का पाप'', आधुनिक भारत एवं धरती मेरा घर 1935 से 1960 ई. के भारत का सम्पूर्ण दस्तावेज है। इन उपन्यासों में तत्कालीन युग भी सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक गतिविधियों का सम्पूर्ण दस्तावेज है।

डॉ. रांगेय राघव की प्रमुख विशेषता यह रही है कि वे अपने साहित्य में न तो उपदेषक के रूप में आये और न ही आदर्शवादी नेताओं की तरह आदर्शो के सहारे समस्याओं का समाधान किया है। वे समाज को उसकी वास्तविक स्थिति हकीकत परिस्थितियों तथा समस्याओं से अवगत करते हुए भलाई बुराई, पाप–पुण्य, सुख–दुख का चित्रण कर मानव के अन्तर्मन का अवलोकन करते हुए अपने उपन्यासों का कथानक निर्मित किया है। ''यथार्थ जीवन का वास्तविक चित्रण है जो समाज की विकृतियों को दूर करने में लगी है। समाज की मूल विकृति है– सम्पति के उत्पादन एवं वितरण में असमानता। मनुश्य का मूल कर्त्वय इस असमानता को दूर करना है।[1]

इनके अधिकांश उपन्यासों में असमान समाज व्यवस्था के विरूद्व जनसंघर्ष का आह्वान हुआ है। डॉ. रांगेय राघव ने सामाजिक, रूढ़ियों पर प्रहार किया तथा सामाजिक विडम्बनाओं से स्त्री पुरूष की यथार्थ स्थिति को अभिव्यक्त किया है। इन उपन्यासों में नारी की परतंत्रता, सामान्ती व्यवस्था, जाति प्रथा, जमीदारी, जागीदारी प्रथा, महाजनी, किसानों, मजदूरों का शोषण, उत्पीडन, अस्पृस्यता का क्रमिक चित्रण मिलता है। डॉ. रांगेय राघव

प्रगतिवादी साहित्य की सुनिश्चित विचारधारा, भावधारा का समग्र मूल्यांकन करते हुए उसका सही एवं स्पष्ट पथ प्रदर्शन भी किया है।

डॉ. रांगेय राघव के उपन्यासों में भारत का सामाजिक जीवन उस सम्पूर्ण परिवेश में अपनी सारी दुर्बलताओं एवं सबलताओं के साकार हो उठते है। अपने सामाजिक उपन्यासों में किसी वाद विशेष का स्वर मंजूर नहीं करते है। जिसमें उसके उपन्यासों में किसी प्रकार का जाति विशेष सम्प्रदाय ग्रह नहीं व्यक्त होता है। इनकी रचनाओं में मार्क्सवादी धारणाओं की अभिव्यक्ति अवश्य मिलती है। परन्तु इसके ग्रहण में रांगेय राघव का उपन्यासकार रूप कही भी असन्तुलित नहीं हो पाया है। इस विषय में इनका स्वयं का मत भी दृष्टव्य है – ''मैं किसी बात में सीमित नहीं हो पाता, क्योंकि मैने किसी की नकल नहीं की। मैंने उपन्यास का मूलाधार भी अन्य अभिव्यक्तियों के रूपों की भांति भाव को माना है और भाव के विषय में मेरा मत स्पष्ट ही है कि लोक कल्याण को समन्वित करके ही युग सत्य के बीच मनुष्य की चेतना का निखार भाव लेकर ही चलता है।''[2]

डा. रांगेय राघव के उपन्यास साहित्य में उन्होंने मानव मूल्यों का यथार्थ चित्रण किया है। प्राचीन भरतीय समाज वर्ण व्यवस्था पर आधारित था। समाज व्यवस्था में व्याप्त रीति रिवाजों एवं परम्पराओं, परम्परागत रूढ़िया मनुष्य तथा समाज के विकास में अवरोध उचक करती है। उनका विरोध करते हुए रांगेय राघव ने प्रगतिशील दृष्टिकोण अभिव्यक्त किया है। गौतम बुद्ध के समय जाति तथा वर्णगत विद्वेश की भावना अपने चरम पर थी। ब्राहम्ण, क्षत्रिय आपस में लड़ रहे थे महाराजा अपने पुत्र सिद्वार्थ से कहते है– '' जब तक ब्राहम्ण शासक थे, तब तक वे उंचे थे फिर ब्राहम्ण क्षत्रिय संघर्ष हुए फिर मित्रता हुई तब ब्राहम्ण भिखारी बना परन्तु धर्म का स्वामी रहा। क्षत्रिय राजा ब्राहम्ण ने अपनी रक्षा के लिए जगह जगह अथर्थ देवी–देवताओं और पुरोहितों को ब्राहम्ण मान लिया। और रक्त शुद्वि को नष्ट करने लगा।''[3]

रांगेय राघव ने समाज में फैले जातिवाद और साम्प्रदायिकता की समस्या को अपने उपन्यासों में उठाया है। अंधेरे के जुगनू में महाजनपद युग से पहले की कथा हैं जाति हित के लिए देश की स्वतन्त्रता को कम महत्व देते थे। जातिगत बन्धन इतने ढृढ़ थे कि व्यक्ति उसके नियमों के उल्लघंन का साहस नहीं कर सकता था। छलपूर्णक ब्राहम्ण कन्या वृहदति का विवाह क्षत्रिय वृषकेतु से होने पर दुखी और क्रुद्व होकर कहती है– ''नीच क्षत्रिय तुम्हारें भीतर रहना विष था नराधम क्षत्रिय होकर तुमने ब्राहमणी पर दृष्टिपात किया।''[4]

इस तरह हम देखते है कि जातिगत विद्वेष भावना किस तरह प्रज्ज्वलित दुई थी जो आज तक धधक रही है। 'सीधा साधा रास्ता' उपन्यास में स्वतंगतार्ष्व के मघ्यवर्ग के जीवन को लिया गया है। इसके प्रायः सभी पात्र किसी न किसी समस्या से ग्रस्त है। ब्रहदत्त जो मध्यवर्गीय पात्र है। समाज की समस्याओं का हल बताता हुआ कहता है– '' इलाज है शिक्षा, स्वतंत्रता हमारा देष, हमरा राज हमें इसके लिए किसानों को तैयार करना होगा कि अंग्रेजी सरकार से असहयोग करे। उसे मजबूर करे वह शासन न कर सके।''[5]

इस तहर हम देखते है कि तत्कालीन युग का मध्यकालिन सिर्फ अपने उत्तरदायित्व एवं अधिकारों के प्रति जागरूक है अपितु निम्नवर्ग को भी उसके अधिकारों से अवगत कराता है तथा उन्हें अधिकार दिलाने के लिए प्रयासरत भी है।

डॉ. रांगेय राघव ने अपने ऐतिहासिक उपन्यासों में नारी की स्थिति का विवेचन किया है उन्होंने अपने अतीत एवं वर्तमान युग के नारी जीवन की तुलना की है। लेखक ने नारी के शोषण एवं उत्पीड़न के लिए जहां पुरूषों को दोषी माना वहीं स्त्रियों को स्वयं भी इसका जिम्मेदार ठहराया है–'' सदा से ऐसा होता आया है बहु आती है तब सास तंग करती है जब बहु सास बन जाती है तब अपने बेटे की बहु से बदला लेती है।''[6]

यह समस्या समाज में किसी न किसी रूप में सदियों से विद्यमान है। रांगेय राघव ने देवकी का बेटा उनन्यास में कृष्ण को देवत्व से उतारकर मनुष्य के रूप में चित्रित किया है– ''मेने कृष्ण के चरित्र को चमत्कारों से अलग करके ऐखा। धर्मगढ़ लोग जो शायद इसे नहीं सह सकेंगे। परन्तु महानता कृष्ण के मनुष्य रूप में प्रकट होती है। चमत्कारों में सत्य डूब जाता है।[7]

कृष्ण ने तत्कालीनल स्थान में व्याप्त जातिगत भेदभाव तथा दासप्रथा का न सिर्फ विरोध किया अपितु उसे समाप्त करने का यथा सम्भव प्रयास भी किया है। रांगेय राघव ने अपने उपन्यास 'काला' में धर्म के ऐतिहासिक रूप को सामाजिक विकास में अवरोधक माना है। इस उपन्यास का नायक मथुरा में धर्म के नाम पर पंडों पुरोहितो द्वारा साधारण जनता को लुटते देखकर दुखी होता है। धर्म के नाम पर होने वाले व्याभिचार का लेखक ने विस्तृत चित्रण किया है। ''सांझ हो गई है। मथुरा की गलियों में रसिक और धार्मिक मिलकर एक हो गए है। बाहर पीछे वाले मेदान में रास लीला रची जा रही है जहां जवान–जवान लड़कियां मर्दो के साथ नाच रही है।''[8]

मनुष्य सुख शान्ति के लिए धर्म की शरण लेता है परन्तु वहां व्याप्त भ्रष्टाचार उसे चेन नही लेने देता । परेशानियों से ग्रस्त कान्ता जब धर्म शरण में जाने की बात सोचती है तो बिन्दियां वहां भी स्थिति से अवगत कराती हुई कहती है –'' कहां जाओगी, यमुना में कछुएं, आसमान में गिद्ध और मथुरा में पण्डे किसी को नहीं छोड़ते। यहां भेड़े है तो बाहर शेर है।''[9]

डॉ. रांगेय राघव मार्क्सवादी होते हुए भी सामाजिक दायित्व के सम्बन्ध में मार्क्सवादी सिद्वान्तों का पार्टी प्रतिबद्वता के नाम पर यथा तथ्य स्वीकृत को गलत मानते हुए लिखते है–''मार्क्सवाद एक दर्शन है उसको व्यवहार में लाने वाली पार्टी एक साधना है। उसमें बुराई हो सकती है वे बदली भी जा सकती है इसको बदलने का काम जनता का है और जनता को पार्टी शिक्षित करतीहै शिक्षक की सारी शक्ति इस शिक्षित जनता में ही है जनता ही उसे उद्वेश्य का अंत है।''[10]

डॉ रांगेय राघव के अपने उपन्यास सीधा–साधा रास्ता में ब्रिटीष सामाजवादियों के आगमन के पूर्ण भारत में सामन्त व्यवस्था किसान मजदूरों पर शोषण का चित्रण किया गया है। उसमें राजनीतिक आंदोलन का भी

चित्रण व्यक्त हुआ है मजदूरों पर विदेशी सरकार की गोलिया क्योंकि सम्पति के लिए बन्दूक विदेशी नहीं है। क्योंकि डराकर आप चाहते है कि हड़ताल नहीं हो।[11]

प्रशासन इस चर्चित हड़ताल को तोड़ने के लिए आर्थिक प्रलोभन भी देता है। परन्तु सफलता नहीं मिलती है। रांगेय राघव नें समाजवादी सामन्ती व्यवस्था का विरोध पुरजोर किया है तथा गणतंत्रात्मक शासन प्रणाली का समर्थन प्रदान किया है। ''मुर्दो का टीला'', ''महायात्रा गाथा'', ''हुजुर'', ''सीध साधा रास्ता'' आदि अपन्यासों में राजनीतिक विचाार अभिव्यक्त किये गये है। मुर्दो का टीला का श्रेष्ठि मणिबन्ध आमन रा का प्रोत्साहन पाकर गणतंत्र शासन व्यवस्था के स्थान पर राजतंत्र की स्थापना के लिए प्रेरित होता है। आमेन–रा मणिबन्ध को निरकुंष राजतन्त्र के लिए डकारता हुआ कहता है। –''गण के जो सदस्य आपके विरूद्व है उन्हें आपको कुचल देना होगा।.... सभ्यता की रक्षा के लिए इन सबको अपना दास बनाना होगा। साधन आपके पास है। धन की कमी नहीं।''[12]

समाजवाद की जड़ यही धन है। मानवता को भूलकर धन के बल पर ये शोषण एवं अनाचार करते है। आमेन–रा की धारणा है कि – ''वह मनुष्य क्या जिसके इंगित पर करोड़ों मनुष्यों का जीवन घास की भांति नहीं कांप उठता।''[13] धन तथा हिंसा द्वारा मणिबन्ध सामाजवादी शासन की स्थापना करता है। रांगेय राघव ने शोषक एवं शोषित वर्ग के अतिरिक्त मध्य वर्ग द्वारा होने वाले शोषण को भी चित्रित किया है ''हुजूर'' उपन्यास के माध्यम से इस वर्ग की आर्थिक स्थिति, रूढी मान्यताएं तथा सतही दृष्टिकोण पर व्यंग्य किया है। ये संस्कृति तथा राष्ट्रीय का झुठा लबोदा ओढे वास्तविक ज्ञान में अनभिज्ञ होने पर भी अपने को सर्वज्ञ समझकर बहस बाजी करते है–''भैया कभी गालिब का नाम लेकर जिधर भी कविता सुनाते थे, कभी हीगेल का नाम लेकर मार्क्स की बाते करते है।''[14]

ये देश कि विकट नाजूक परिस्थितियों का अनुचित लाभ उठानें में पीछे नहीं रहते और अब पिछे शोदामों को उचित मोल पर दलालों के जरिये बेच देने का इंतजाम हो गया है।[15]

मार्क्स ने धर्म की व्याख्या की है तथा मानवता को मानव का सबसे बड़ा धर्म बताया है वे लिखते है कि ''धर्म एक भ्रमात्मक सूर्य है जो कि मनुष्य के ईर्द गिर्द तब तक घूमता है जब ताकि मनुष्य अपने अपने(मनुष्य के) गिर्द नहीं घूमता। इसलिए नए जगत की सृष्टि करने वाले इतिहास का काम है कि पर लोक के सत्य के लुप्त हो जाने पर इस यकीन सत्य स्थापित करें। धर्म के खण्डन का अंतिम पाठ यह होगा कि मानव जाति के लिए मानव सर्वश्रेष्ठ है। अतएवं उन सभी परिस्थितियों को खत्म कर दिया जाए जिन्होंने मानव को एक पतित दास उपेक्षित घृणास्पद प्राणी बना दिया है।[16]

साहित्यकार रचना में धर्म की उपयोगिता पर बहस हमेशा अपने साहित्य के माध्यम से करते रहते है। इस संदर्भ में डॉ रांगेय राघव का स्पष्ट मत है कि –''धर्म यदि अंधविश्वास और मोक्ष रूढ की कल्पना ही नहीं है तो सदा ये दोनों काम और अर्थ दास क्यों रहे है। अर्थ और काम ने ही मोक्ष और धर्म पर शासन किया है। शासन की व्यवस्था अर्थ के आधार पर बनती है धर्म और मोक्ष की कल्पनाएं है।[17]

डॉ. रांगेय राघव ने मार्क्सवाद पर राजनीतिक, सामाजिक सांस्कृतिक आर्थिक आधार पर उपन्यासों में अपने विचार व्यक्त किये ही अपने उपन्यास के माध्यम से रूढ़ियों और धर्माडम्बरों से ग्रसित समाज को वास्तविक यर्थाथ से साक्षात्कार कराकर उसे धार्मिक सरोकारों संस्कृति दिलाने का प्रयास किया है।

संदर्भ

1. साहित्य सन्देश– रांगेय राघव समृति अंक सनृ 1963 प्र.सकृ265
2. साहित्य सन्देश– आधुनिक उपन्यास अंक 1959 प्र.स. 87, (उपन्यास केसे लिखे गए डॉ रांगेय राघव)
3. यशोधरा जीत गई– रांगेय राघव– प्र.सं. 30
4. अंधेरे के जुगनु–डॉ रांगेय राघव – प्र.स. 142
5. सीधा साधा रास्ता –डॉ रांगेय राघव – प्र.स.289
6. मूर्दो का टीला–डॉ रांगेय राघव – प्र.स. 350
7. देवकी का बेटा– भूमिका
8. कामा–डॉ रांगेय राघव – प्र.स. 26
9. राही– प्र.स. 125
10. समीक्षा और आदर्ष –डॉ रांगेय राघव – प्र.स. 46
11. सीधा साधा रास्ता –डॉ रांगेय राघव – प्र.स. 279
12. मुर्दो का टीला–डॉ रांगेय राघव – प्र.स. 80
13. राही– प्र.स. 396
14. हुजूर –डॉ रांगेय राघव – प्र.स. 94
15. विषादरूढ –डॉ रांगेय राघव – प्र.स. 109
16. वैज्ञानिक भौतिकवाद– राहुल सांकृल्यायन – प्र.स. 50–501
17. छोटी सी बात–डॉ रांगेय राघव – प्र.स. 83